भाषा शिक्षण एक कला

भय था
भविष्य कहीं न छुप जाए
प्रगति कहीं न रुक जाए
तो सोचा
हर घर गुरुकुल बन जाए

प्रयासरत :

कंचन वासन
हिंदी शिक्षिका
सरकारी कन्या हाई स्कूल
शाहकोट (जालंधर)

मार्गदर्शक और सहयोगी
हरीश नागपाल
(जिला रिसोर्स पर्सन हिन्दी,जालंधर)
हिन्दी शिक्षक सरकारी हाई स्कूल निज्जरां.

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

भाषा शिक्षण एक कला

कक्षा नौवीं

कहानी शिक्षण

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

सौजन्य: **कंचन वासन**

हिंदी शिक्षिका

सरकारी कन्या हाई स्कूल

शाहकोट (जालंधर)

मार्गदर्शक और सहयोगी : हरीश नागपाल

(जिला रिसोर्स पर्सन हिन्दी,जालंधर)

हिन्दी शिक्षक,सरकारी हाई स्कूल निज्जरां

कहानी भाग

मुँशी प्रेमचन्द

(सन् 1880-1936)

मुँशी प्रेमचन्द जी का जन्म सन् 1880 में वाराणसी के लमही गाँव में हुआ था। खेती उनके घर का मुख्य व्यवसाय था। परन्तु ग़रीबी के कारण इनके पिता मुँशी अजायबराय को डाकखाने में क्लर्की करनी पड़ी। प्रेमचन्द के जन्म के समय यद्यपि उनके पिता नौकरी कर रहे थे, परन्तु मूलत: कृषक होने के कारण उनके घर का वातावरण एक किसान के घर के समान था। इसीलिए प्रेमचन्द को भी ये चीज़ें संस्कारों में ही मिलीं। बचपन में ही प्रेमचन्द की दो बहनों और माता का देहान्त हो गया। इन घटनाओं का प्रेमचन्द पर गहरा असर हुआ। घर की ग़रीबी और माँ के प्यार से वंचित प्रेमचन्द ने अभावों में ही अपनी शिक्षा शुरू की तथा उर्दू की विशेष शिक्षा पाई। तेरह वर्ष की अवस्था तक प्रेमचन्द ने उर्दू के अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ पढ़ लिए। ग़रीबी में भी इन्होंने जीवन के उच्च आदर्शों तथा ईमानदारी का त्याग नहीं किया। वे ट्यूशन करते हुए अंधेरी कोठरी में तेल की कुप्पी से पढ़ते थे। जैसे-तैसे इन्होंने सन् 1910 ई० में इन्टर की परीक्षा पास की, लेकिन परीक्षा पास करने से पहले ही अठारह रुपये मासिक पर स्कूल में नौकरी कर ली थी। ग़रीबी के कारण इन्हें अनेक बार महाजनों से उधार लेना पड़ता था, इसीलिए इन्हें महाजनी व्यापार की इतनी समझ थी और इनके साहित्य में उसकी चर्चा बार-बार होती थी। पिता ने इन्हें धनपतराय नाम दिया था जबकि चाचा ने इन्हें नवाबराय के नाम से पुकारा। नवाबराय नाम से ही इन्होंने आरम्भ में उर्दू में लिखना शुरू किया था और इनका पहला उर्दू कहानी-संग्रह 'सोज़-ए-वतन' प्रकाशित हुआ, जिसमें राष्ट्रीयता की भावना को देखते हुए अंग्रेज़ सरकार ने उसकी सारी प्रतियाँ जलाकर पाबंदी लगा

दी। इसी के साथ 'नवाबराय' लुप्त हो गये और 'प्रेमचन्द' के नाम से इन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया। लेखन–कार्य के अतिरिक्त इन्होंने 'जमाना' 'मर्यादा','माधुरी','जागरण' और 'हंस' नामक पत्रिकाओं का समय–समय पर सम्पादन किया। 'हंस' के लिए ही इन्होंने फिल्मी दुनिया में कदम रखा था, किंतु इनका मन वहाँ रमा नहीं।

प्रेमचन्द की सबसे पहली मौलिक कहानी 'संसार का अनमोल रत्न' बताई जाती है, जो सन् 1907 में 'जमाना' में छपी थी। उसके बाद इन्होंने अनेक उपन्यासों तथा कहानियों की रचना की। इनकी लगभग तीन सौ कहानियों को 'मानसरोवर' नाम से आठ भागों में संकलित किया गया। 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' इनके चर्चित उपन्यास हैं। प्रेमचन्द का अन्तिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' (सन् 1936 ई०) अपूर्ण ही रह गया। इन्होंने नाटकों की भी रचना की। 'संग्राम', 'कर्बला' और 'प्रेम की वेदी' इनके नाटकों के नाम हैं। इनके आलोचनात्मक लेख 'हंस' तथा 'जागरण' की फाइलों में मिलते हैं। कुल मिला कर प्रेमचन्द हिंदी कथा साहित्य के सम्राट थे। इन्होंने सामाजिक समस्याओं को कहानियों और उपन्यासों में उतार कर हिंदी कहानी और उपन्यास को एक नई दिशा दी।

पाठ–परिचय : प्रस्तुत कहानी में लेखक ने न्यायप्रियता और मित्रता पर प्रकाश डाला है। पंच के आसन पर आसीन साधारण मानव भी अपने–पराये, ईर्ष्या द्वेष के स्तर से ऊपर उठकर न्याय करने लगता है। न्याय के अतिरिक्त उसे कुछ नहीं सूझता। ये कहानी संदेश देती है कि निष्पक्ष न्याय की हर ओर जय जयकार होती है। यदि कभी किसी को न्याय करने का उत्तरदायित्व दिया जाए तो उसे काम क्रोध, मद लोभ और मोह से ऊपर उठकर न्याय करना चाहिए।

पंच परमेश्वर

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन–देन में भी साझा था। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे और अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे। उनमें न खान–पान का व्यवहार था, न धर्म का नाता; केवल विचार मिलते थे। मित्रता का मूलमंत्र यही है।

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी ख़ाला (मौसी) थी। उसके पास कुछ थोड़ी–सी मिलकियत थी परंतु निकट संबंधियों में कोई न था। जुम्मन ने लंबे–चौड़े वादे करके वह मिलकियत अपने नाम लिखवा ली। जब तक उसकी रजिस्ट्री न हुई थी, तब तक ख़ालाजान का खूब आदर–सत्कार किया गया। हलवे–पुलाव की वर्षा–सी की गई पर रजिस्ट्री की मोहर ने इन ख़ातिरदारियों पर मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज़, तीखे सालन भी देने लगी। जुम्मन शेख भी निष्ठुर हो गए। अब बेचारी ख़ालाजान को प्राय: नित्य ही ऐसी बातें सुननी पड़ती थीं–

''बुढ़िया न जाने कब तक जिएगी! दो–तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया, मानो मोल ले लिया है! बघारी दाल के बिना रोटियाँ नहीं उतरतीं! जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से अब तक गाँव मोल ले लेते!''

कुछ दिन ख़ालाजान ने सुना और सहा परंतु जब न सहा गया, तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने स्थानीय कर्मचारी गृहस्वामिनी के प्रबंध में दखल देना उचित न समझा। अंत में एक दिन ख़ाला ने जुम्मन से कहा, ''बेटा! तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न होगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अपना पका–खा लूँगी।''

जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया, ''रुपए क्या यहाँ फलते हैं?''

ख़ाला ने नम्रता से कहा, ''मुझे कुछ रूखा–सूखा चाहिए भी कि नहीं ?''

जुम्मन ने गंभीर स्वर में जवाब दिया, ''तो कोई यह थोड़े ही समझा था कि तुम मौत से लड़कर आई हो !''

ख़ाला बिगड़ गईं, उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन हँसे, जिस तरह कोई शिकार हिरन को जाल की तरफ़ जाते देखकर मन–ही–मन हँसता है। वह बोले, ''हाँ, ज़रूर पंचायत करो। फ़ैसला हो जाए। मुझे भी यह रात–दिन की खटपट पसंद नहीं।''

पंचायत में किसकी जीत होगी, इस विषय में जुम्मन को कुछ भी संदेह न था। आसपास के गाँवों में ऐसा कौन था, जो उसके अनुग्रहों का ऋणी न हो ? ऐसा कौन था, जो उसको शत्रु बनाने का साहस कर सके ? किसमें इतना बल था, जो उसका सामना कर सके ? आसमान के फ़रिश्ते तो पंचायत करने आवेंगे नहीं !

इसके बाद कई दिन तक बूढ़ी ख़ाला हाथ में एक लकड़ी लिए आसपास के गाँवों में दौड़ती रही। कमर झुककर कमान हो गई थी।

बिरला ही कोई भला आदमी होगा, जिसके सामने बुढ़िया ने दुःख के आँसू न बहाए हों। ऐसे न्यायप्रिय, दयालु, दीन–वत्सल पुरुष बहुत कम थे, जिन्होंने उस अबला के दुखड़े को गौर से सुना हो और उसको सांत्वना दी हो। चारों ओर घूम–घामकर बेचारी अलगू चौधरी के पास आई, ''बेटा, तुम भी दमभर के लिए मेरी पंचायत में चले आना।''

अलगू–यों आने को आ जाऊँगा; मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

ख़ाला–क्यों बेटा ?

अलगू–अब इसका क्या जवाब दूँ ? अपनी खुशी ! जुम्मन मेरा पुराना मित्र है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।

ख़ाला–बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे ?

हमारे सोए हुए धर्मज्ञान की सारी संपत्ति लुट जाए, तो उसे ख़बर नहीं होती परंतु ललकार सुनकर वह सचेत हो जाता है, फिर उसे कोई जीत नहीं सकता। अलगू इस सवाल का कोई उत्तर न दे सका पर उसके हृदय में ये शब्द गूँज रहे थे–

'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?'

संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। शेख जुम्मन ने पहले से ही फ़र्श बिछा रखा था। उन्होंने पान, इलायची, हुक्के–तंबाकू आदि का प्रबंध भी किया था। हाँ, स्वयं अलबत्ता अलगू चौधरी के साथ ज़रा दूर पर बैठे हुए थे। जब पंचायत में कोई आ जाता था, तब दबे हुए सलाम से उसका स्वागत करते थे।

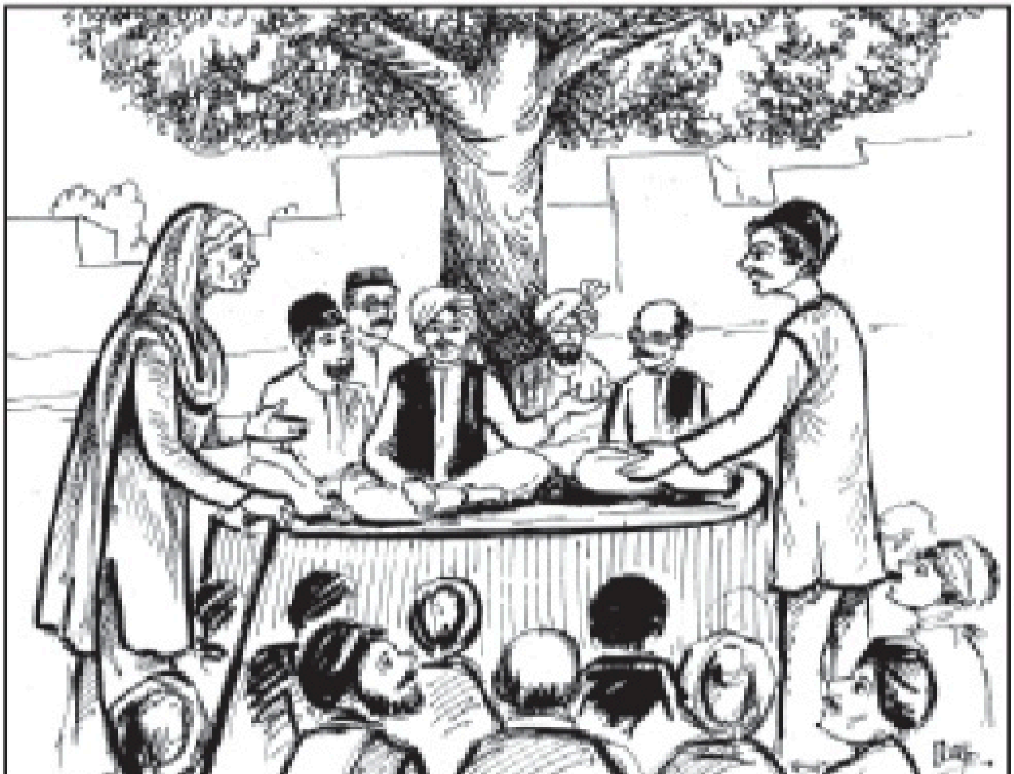

पंच लोग बैठ गए, तो बूढ़ी ख़ाला ने उनसे विनती की–

''पंचो, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भानजे जुम्मन के नाम लिख दी थी। इसे आप लोग जानते ही होंगे। जुम्मन ने मुझे

ता–हयात रोटी–कपड़ा देना क़बूल किया। सालभर तो मैंने इसके साथ रो–धोकर काटा पर अब रात–दिन का रोना नहीं सहा जाता। मुझे न पेट की रोटी मिलती है, न तन का कपड़ा। बेकस बेवा हूँ। कचहरी दरबार नहीं कर सकती। तुम्हारे सिवा और किससे अपना दुख सुनाऊँ? तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह पर चलूँ। मैं पंचों का हुक्म सिर–माथे पर चढ़ाऊँगी।''

रामधन मिश्र, जिनके कई असामियों को जुम्मन ने अपने गाँव में बसा लिया था, बोले, ''जुम्मन मियाँ, किसे पंच बदते हो? अभी से इसका निपटारा कर लो। फिर जो कुछ पंच कहेंगे, वही मानना पड़ेगा।''

जुम्मन को इस समय सदस्यों में विशेषकर वे ही लोग दीख पड़े, जिनसे किसी–न–किसी कारण उनका वैमनस्य था। जुम्मन बोले, ''पंचों का हुक्म अल्लाह का हुक्म है। ख़ालाजान जिसे चाहें, उसे पंच बनाएँ।''

ख़ाला ने चिल्लाकर कहा,''अरे अल्लाह के बंदे! पंचों का नाम क्यों नहीं बता देता? कुछ मुझे भी तो मालूम हो।''

जुम्मन ने क्रोध से कहा,'' अब इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ। तुम जिसे चाहे पंच बना लो।''

ख़ालाजान जुम्मन के आरोप को समझ गई, वह बोली, ''बेटा, ख़ुदा से डरो। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। कैसी बात कहते हो! और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो, तो जाने दो; अलगू चौधरी को तो मानते हो? लो, मैं उन्हीं को सरपंच बनाती हूँ।''

जुम्मन शेख आनंद से फूल उठे परंतु भावों को छिपाकर बोले, ''अलगू ही सही, मेरे लिए जैसे रामधन वैसे अलगू।''

अलगू इस झमेले में फँसना नहीं चाहते थे। वे कन्नी काटने लगे। बोले, ''ख़ाला, तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है।''

ख़ाला ने गंभीर स्वर में कहा, ''बेटा, दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंचों के दिल में ख़ुदा बसता है। पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह ख़ुदा की तरफ़ से निकलती है।''

अलगू चौधरी सरपंच हुए। रामधन मिश्र और जुम्मन के दूसरे विरोधियों ने बुढ़िया को मन में बहुत कोसा।

अलगू चौधरी बोले, ''शेख जुम्मन! हम और तुम पुराने दोस्त हैं! जब काम पड़ा, तुमने हमारी मदद की है और हम भी जो कुछ बन पड़ा, तुम्हारी सेवा करते रहे हैं; मगर इस समय तुम और बूढ़ी ख़ाला, दोनों हमारी निगाह में बराबर हो। तुमको पंचों से जो कुछ अर्ज़ करनी हो, करो।''

जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाज़ी मेरी है। अलगू यह सब दिखावे की बातें कर रहा है। अतएव शांत चित्त होकर बोले, ''पंचो, तीन साल हुए, ख़ालाजान ने अपनी जायदाद मेरे नाम लिख दी थी। मैंने उन्हें ता-हयात खाना-कपड़ा देना क़बूल किया था। ख़ुदा गवाह है, आज तक मैंने ख़ालाजान को कोई तकलीफ़ नहीं दी। मैं उन्हें अपनी माँ के समान समझता हूँ। उनकी ख़िदमत करना मेरा फर्ज़ है; मगर औरतों में ज़रा अनबन रहती है, इसमें मेरा क्या बस है? ख़ालाजान मुझसे माहवार खर्च अलग माँगती हैं। जायदाद जितनी है, वह पंचों से छिपी नहीं। उससे इतना मुनाफ़ा नहीं होता कि माहवार खर्च दे सकूँ।''

अलगू चौधरी को हमेशा कचहरी से काम पड़ता था। अतएव वह पूरा कानूनी आदमी था। उसने जुम्मन से जिरह शुरू की। एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह पड़ता था। रामधन मिश्र इन प्रश्नों पर मुग्ध हुए जाते थे। जुम्मन चकित थे कि अलगू को हो क्या गया। अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी-कैसी बातें कर रहा था! इतनी ही देर में ऐसा कायापलट हो गया कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर यह निकाल रहा है? क्या इतने दिनों की दोस्ती कुछ भी काम न आवेगी?

जुम्मन शेख तो इसी संकल्प–विकल्प में पड़े हुए थे कि इतने में अलगू ने फ़ैसला सुनाया–

''जुम्मन शेख! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें नीति–संगत मालूम होता है कि ख़ालाजान को माहवार खर्च दिया जाए। हमारा विचार है कि खाला की जायदाद से इतना मुनाफ़ा अवश्य होता है कि माहवार खर्च दिया जा सके। बस, यही हमारा फ़ैसला है। अगर जुम्मन को खर्च देना मंजूर न हो, तो संपत्ति की वह रजिस्ट्री रद्द समझी जाए।''

यह फ़ैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। मगर रामधन मिश्र और अन्य पंच अलगू चौधरी की इस नीति–परायणता की प्रशंसा जी खोलकर कर रहे थे। वे कहते थे– इसका नाम पंचायत है! दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। दोस्ती दोस्ती की जगह है किंतु धर्म का पालन करना मुख्य है। ऐसे ही सत्यवादियों के बल पर पृथ्वी ठहरी है, नहीं तो वह कब की रसातल में चली जाती।

इस फ़ैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। अब वे साथ–साथ बातें करते नहीं दिखाई देते। इतना पुराना मित्रता रूपी वृक्ष सत्य का एक झोंका भी न सह सका। सचमुच, वह बालू की ही ज़मीन पर खड़ा था।

उनमें अब शिष्टाचार का अधिक व्यवहार होने लगा। एक–दूसरे की आवभगत ज़्यादा करने लगे। वे मिलते–जुलते थे, मगर उसी तरह, जैसे तलवार से ढाल मिलती है।

जुम्मन के चित्त में मित्र की कुटिलता आठों पहर खटा करती थी। उसे हर घड़ी यही चिंता रहती थी कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले।

अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है परंतु बुरे कामों की सिद्धि में यह बात नहीं होती; जुम्मन को भी बदला लेने का अवसर जल्द

ही मिल गया। पिछले साल अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी मोल लाए थे। बैल पछाही जाति के सुंदर, बड़े-बड़े सींगोंवाले थे। महीनों तक आसपास के गाँव के लोग उनके दर्शन करते रहे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। जुम्मन ने दोस्तों से कहा, ''यह दगाबाज़ी की सज़ा है। इनसान सब्र भले ही कर जाए पर ख़ुदा नेक-बद सब देखता है।''

अब अकेला बैल किस काम का? उसका जोड़ बहुत ढूँढ़ा गया पर न मिला। तो निश्चय हुआ कि इसे बेच डालना चाहिए। गाँव में एक समझू साहू थे, वे इक्का-गाड़ी हाँकते थे। गाँव से गुड़-घी लादकर मंडी ले जाते, मंडी से तेल-नमक भर लाते और गाँव में बेचते। इस बैल पर उनका मन लहराया। उन्होंने सोचा, यह बैल हाथ लगे तो दिनभर में बेखटके तीन खेप हों। आजकल तो एक ही खेप में लाले पड़े रहते हैं। बैल देखा, गाड़ी में दौड़ाया, मोल-तोल किया और उसे लाकर द्वार पर बाँध ही दिया। एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा। चौधरी को भी गरज़ थी ही, घाटे की परवाह न की।

समझू साहू ने नया बैल पाया, तो लगे उसे रगेदने। वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगे। न चारे की फ़िक्र थी न पानी की, बस खेपों से काम था। मंड़ी ले गए, वहां कुछ रूखा भूसा सामने डाल दिया। बेचारा जानवर अभी दम भी न लेने पाता था कि फिर जोत दिया। इक्के का जुआ देखते ही बैल का लहू सूख जाता था। एक-एक पग चलना दूभर था। हड्डियाँ निकल आई थीं परंतु था वह पानीदार, मार की बरदाशत न थी।

एक दिन चौथी खेप में साहूजी ने दूना बोझा लादा। दिनभर का थका जानवर, पैर न उठते थे। कोड़े खाकर कुछ दूर दौड़ा, धरती पर गिर पड़ा, और ऐसा गिरा कि फिर न उठा। कई बोरे गुड़ और कई पीपे घी उन्होंने बेचे थे, दो-ढाई सौ रुपए कमर में बँधे थे। इसके सिवा गाड़ी पर कई बोरे नमक

के थे, अतएव छोड़कर जा भी न सकते थे। लाचार बेचारे गाड़ी पर लेट गए। वहीं रतजगा करने की ठान ली। आधी रात तक नींद को बहलाते रहे। सुबह जब नींद टूटी और कमर पर हाथ रखा, तो थैली गायब! घबराकर इधर-उधर देखा, तो कई कनस्तर तेल भी नदारद! प्रात:काल रोते-बिलखते घर पहुँचे। सहुआइन ने जब यह बुरी सुनावनी सुनी, तब पहले तो रोई, फिर अलगू चौधरी को गालियाँ देने लगी—''निगोड़े ने ऐसी कुलच्छनी बैल दिया कि जन्म-भर की कमाई लुट गई।''

इस घटना को हुए कई महीने बीत गए। अलगू जब अपने बैलों के दाम माँगते, तब साहू और सहुआइन दोनों ही झल्ला उठते। चौधरी के अशुभ चिंतकों की कमी न थी। ऐसे अवसरों पर वे भी एकत्र होते आते और साहू जी के बर्राने की पुष्टि करते।

डेढ़ सौ रुपए से इस तरह हाथ धो लेना अलगू चौधरी के लिए आसान न था। एक बार वे भी गरम पड़े। साहू जी बिगड़कर लाठी ढूँढ़ने घर चले गए! अब सहुआइन ने मैदान लिया। प्रश्नोत्तर होते-होते हाथा-पाई की नौबत आ पहुँची। सहुआइन ने घर में घुसकर किवाड़ बंद कर लिए। शोरगुल सुनकर गाँव के भलेमानस जमा हो गए। उन्होंने दोनों को समझाया। साहू जी को दिलासा देकर घर से निकाला। लोगों ने परामर्श दिया कि इस तरह से काम न चलेगा। पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाए, उसे स्वीकार कर लो। साहू जी राज़ी हो गए। अलगू ने भी हामी भर ली।

पंचायत की तैयारियाँ होने लगीं। दोनों पक्षों ने अपने-अपने दल बनाने शुरू किए। इसके बाद तीसरे दिन उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी।

पंचायत बैठ गई, तो रामधन मिश्र ने कहा, ''अब देरी क्या है? पंचों का चुनाव हो जाना चाहिए। बोलो चौधरी, किस-किसको पंच बनाते हो?''

अलगू ने दीन भाव से कहा, ''समझू साहू ही चुन लें।''

समझू खड़े हुए और कड़ककर बोले, ''मेरी ओर से जुम्मन शेख।''

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा 'धक्-धक्' करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो। रामधन अलगू के मित्र थे। वह बात तो ताड़ गए। पूछा, ''क्यों चौधरी, तुम्हें कोई उज़्र तो नहीं?''

चौधरी ने निराश होकर कहा, ''नहीं, मुझे क्या उज़्र होगा!''

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधार होता है। जब हम राह भूलकर भटकने लगते हैं, तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक बन जाता है।

जुम्मन शेख के मन में भी सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही अपनी ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उसने सोचा, 'मैं इस समय न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में मेरे बुरे विचारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ भर भी टलना उचित नहीं।'

पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करने शुरू किए। बहुत देर तक दोनों दल अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते रहे। यह तो सब चाहते ही थे कि समझू को बैल का मूल्य देना चाहिए परंतु दो महाशय इस कारण रिआयत करना चाहते थे कि बैल के मर जाने से समझू की हानि हुई। सभ्य व्यक्ति समझू को दंड भी देना चाहते थे, जिससे फिर किसी को पशुओं के साथ ऐसी निर्दयता करने का साहस न हो। अंत में जुम्मन ने फ़ैसला सुनाया-

''अगलू चौधरी और समझू साहू! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस वक़्त उन्होंने बैल लिया, उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय दाम दे दिए

जाते, तो झगड़ा ही खत्म हो जाता। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने–चारे का कोई अच्छा प्रबंध न किया गया।''

रामधन मिश्र बोले, ''समझू ने बैल को जान–बूझकर मारा है, अतएव उनसे दंड लेना चाहिए।''

जुम्मन बोले, ''यह दूसरा सवाल है! हमको इससे कोई मतलब नहीं।''

झगड़ू साहू ने कहा, ''समझू के साथ कुछ रिआयत होनी चाहिए।''

जुम्मन बोले, ''यह अलगू चौधरी की इच्छा पर निर्भर है। यह रिआयत करें, तो उनकी भलमनसी।''

अलगू चौधरी फूले न समाए। उठ खड़े हुए और ज़ोर से बोले, ''पंच–परमेश्वर की जय।''

इसके साथ ही चारों ओर प्रतिध्वनि हुई, ''पंच–परमेश्वर की जय!''

प्रत्येक मनुष्य जुम्मन की नीति को सराहता था।– ''इसे कहते हैं न्याय! यह मनुष्य का काम नहीं, पंच में परमेश्वर वास करते हैं, यह उन्हीं की महिमा है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है!''

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले, ''भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की, तब से मैं तुम्हारा प्राणघातक शत्रु बन गया था परंतु आज मुझे ज्ञान हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की ज़बान से ख़ुदा बोलता है।'' अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिल का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

शब्दार्थ

अटल = दृढ़, पक्का
मिलकियत = संपत्ति
रजिस्ट्री = जमीन-जायदाद बेचने-खरीदने के लिए की जाने वाली कानूनी लिखा-पढ़ी
ख़ातिरदारी = सत्कार
सालन = साग आदि की मसालेदार तरकारी
निष्ठुर = कठोर
ऊसर = बंजर
बघारी = तड़का, छौंक
गृहस्वामिनी = घर की मालकिन
निर्वाह = गुज़ारा
धृष्टता = ढिठाई, ढीठपन
अनुग्रह = कृपा
ऋणी = कर्ज़दार
फ़रिश्ता = देवदूत
बिरला = बहुत कम मिलने वाला
दीन वत्सल = दीनों से प्रेम करने वाले
सांत्वना = ढाढ़स बँधाना
दमभर = पल भर
ईमान = अच्छी नीयत
ता-हयात = जीवन भर
क़बूल = स्वीकार
बेकस = निस्सहाय
बेवा = विधवा
असामी = किसी महाजन या दुकानदार से लेन देन रखने वाला
वैमनस्य = वैर, विरोध
अर्ज़ = प्रार्थना
बाज़ी = दाँव, बारी
ख़िदमत = सेवा
फर्ज़ = कर्तव्य
मुनाफ़ा = लाभ
जिरह = बहस
कायापलट = बहुत बड़ा परिवर्तन
संकल्प-विकल्प = सोच-विचार में
नीति संगत = नीति के अनुरूप
माहवार = महीने भर का
नीति परायणता = नीति का पालन करना
बालू = रेत
शिष्टाचार = सभ्य व्यवहार
आवभगत = आदर-सत्कार
चित्त = हृदय
कुटिलता = धोखेबाज़ी, दुष्टता
दैवयोग = भाग्य से
दगाबाज़ी = छल बाज़ी, धोखा
सब्र = सहन, धैर्य
नेक-बद = भला-बुरा
बेखटके = बिना संकोच के, बेधड़क

खेप	=	एक फेरा, एक बार में ढोया जाने वाला बोझ
गरज़	=	मतलब
रगेदने	=	भगाना, दौड़ाना
रतजगा	=	रातभर जागना
नदारद	=	गायब, लुप्त
सुनावनी	=	ख़बर, सूचना
बर्राना	=	क्रोध में बोलना
परामर्श	=	सलाह
ताड़ जाना	=	भाँप जाना
उज़्र	=	आपत्ति, एतराज़
संकुचित	=	तंग
पथ प्रदर्शक	=	राह दिखाने वाला
सर्वोच्च	=	सबसे ऊँचा
देववाणी	=	देवताओं की वाणी
सदृश	=	समान, तुल्य
भलमनसी	=	सज्जनता
सराहना	=	प्रशंसा
प्राण घातक	=	जान लेने वाला

अभ्यास

(क) विषय बोध

1. निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए:

(i) प्रश्न - जुम्मन शेख की गाढ़ी मित्रता किसके साथ थी?

उत्तर - जुम्मन शेख की गाढ़ी मित्रता अलगू चौधरी के साथ थी।

(ii) प्रश्न - रजिस्ट्री के बाद जुम्मन का व्यवहार ख़ाला के प्रति कैसा हो गया था?

उत्तर - रजिस्ट्री के बाद जुम्मन का व्यवहार निष्ठुर हो गया। अब वो उसका बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखता था।

(iii) प्रश्न - ख़ाला ने जुम्मन को क्या धमकी दी?

उत्तर - खाला ने जुम्मन को पंचायत करने की धमकी दी।

(iv) प्रश्न- बूढ़ी ख़ाला ने पंच किसको बनाया था?
उत्तर - बूढ़ी खाला ने पंच जुम्मन के मित्र अलगू चौधरी को बनाया।

(v) प्रश्न - अलगू के पंच बनने पर जुम्मन को किस बात का पूरा विश्वास था?
उत्तर - अलगू जुम्मन का परम मित्र था । इसलिए जुम्मन को विश्वास था कि अलगू उसके ही हक़ में फैसला करेगा।

(vi) प्रश्न- अलगू ने अपना फैसला किसके पक्ष में दिया?
उत्तर - अलगू ने अपना फैसला बूढ़ी खाला के पक्ष में दिया।

(vii) प्रश्न - एक बैल के मर जाने पर अलगू ने दूसरे बैल का क्या किया?
उत्तर - एक बैल के मर जाने पर अलगू ने दूसरा बैल समझू साहू को बेच दिया।

(viii) प्रश्न - समझू साहू ने बैल का कितना दाम चुकाने का वादा किया?
उत्तर - समझू साहू ने बैल का दाम डेढ़ सौ रुपए चुकाने का वादा किया।

(ix) प्रश्न- पंच परमेश्वर की जय-जयकार किस लिए हो रही थी?
उत्तर - पंच परमेश्वर की जय - जयकार हो रही थी क्योंकि जुम्मन शेख ने दोस्ती - दुश्मनी से ऊपर उठ कर सही फैसला सुनाया था।

कंचन वासन

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए:

(i) प्रश्न - जुम्मन और उसकी पत्नी द्वारा ख़ाला की ख़ातिरदारी करने का क्या कारण था?

उत्तर - बूढ़ी खाला के पास कुछ जायदाद थी और उसकी कोई औलाद न थी। जुम्मन और उसकी पत्नी सारी जायदाद अपने नाम लिखवाना चाहते थे।इसलिए वो खाला की खातिरदारी करते थे।

(ii) प्रश्न - बूढ़ी ख़ाला ने पंचों से क्या विनती की?

उत्तर - बूढ़ी खाला ने पंचों से विनती की कि जुम्मन और उसकी पत्नी अब उसे सही समय पर खाना - कपड़ा नहीं देते, जबकि उसकी जायदाद लेते समय जुम्मन ने उसकी सेवा करने का वादा किया था ।

(iii) प्रश्न- अलगू ने पंच बनने के झमेले से बचने के लिए बूढी खाला से क्या कहा?
उत्तर- अलगू बूढ़ी खाला के झमेले में नहीं पड़ना चाहता था क्योंकि वो जुम्मन का मित्र था। वह अपनी दोस्ती में खटास नहीं लाना चाहता था। इसलिए उसने बूढ़ी खाला से कहा, "तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाड़ी दोस्ती है।"

(iv) प्रश्न - अलगू चौधरी ने अपना क्या फैसला सुनाया?
उत्तर-अलगू चौधरी ने अपना फैसला सुनाया कि न्याय-संगत यही है कि बूढ़ी खाला को माहवार खर्च मिले। खाला की जायदाद से इतना लाभ अवश्य ही होता है कि हर महीने खर्च दिया जा सके। यदि जुम्मन इस फैसले को नहीं मानेगा तो संपत्ति की रजिस्ट्री रद्द समझी जाएगी।

(V) प्रश्न - अलगू चौधरी से खरीदा हुआ समझू साहू का बैल किस कारण मरा?
उत्तर- समझू साहू ने जैसे ही नया बैल खरीदा तो उसे अपनी इक्का गाड़ी में जोत लिया। पहले जहाँ वह दिन में सामान लेने के लिए एक चक्कर लाते थे, अब वह तीन-चार चक्कर लगाने लगे थे ।ऊपर से बैल के चारे - पानी का भी ध्यान नहीं रखते थे। भोजन, पानी की कमी और अधिक काम से बैल कमजोर होता जा रहा था। एक दिन अधिक बोझ उठाने के कारण बैल रास्ते में ही मर गया।

(vi) प्रश्न - सरपंच बनने पर भी जुम्मन शेख अपना बदला क्यों नहीं ले सका?
उत्तर- सरपंच बनने पर भी जुम्मन शेख अपना बदला नहीं ले सका क्योंकि जैसे ही वह सरपंच बना तो उसके दिल में सरपंच के उच्च पद की ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हो गया। उसे महसूस हुआ कि अब उसके मुख से निकलने वाला प्रत्येक वाक्य देव - वाक्य होगा। इसलिए उसने सच का साथ दिया और वह अलगू से अपना बदला न ले सका।

कंचन वासन

(vii) प्रश्न - जुम्मन ने क्या फैसला सुनाया?
उत्तर- जुम्मन ने अलगू के पक्ष में फैसला सुनाते हुए कहा कि जब समझू ने बैल खरीदा था तो बैल एकदम स्वस्थ था। यदि उसी समय बैल के दाम दिए होते तो आज यह झगड़ा ही न होता, बैल की मृत्यु किसी बीमारी से नहीं अपितु बहुत ज़्यादा बोझ ढोने से हुई है। अब साहू को बैल की कीमत देनी ही पड़ेगी।

(viii) प्रश्न - 'मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई' इस वाक्य का क्या अभिप्राय है।
उत्तर- ' मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई' वाक्य का अभिप्राय है कि अलगू और जुम्मन की वर्षों पुरानी जो मित्रता कभी शत्रुता में बदल गई थी आज जुम्मन के निष्पक्ष न्याय से फिर से दोस्ती में बदल गई। दोनों के दिल में एक-दूसरे के प्रति फिर से मैत्री भाव जाग उठा।

कंचन वासन

प्रश्न - 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए:

(i) प्रश्न - 'पंच परमेश्वर' कहानी का क्या उद्देश्य है ?

उत्तर - पंच परमेश्वर कहानी में लेखक ने न्याय प्रियता और मित्रता पर प्रकाश डाला है।लेखक बताना चाहता है कि जब किसी को पंच बनने का मौका मिले तो वह अपना - पराया,मित्र - शत्रु व लाभ - हानि से ऊपर उठ कर सोचे और बिना किसी का पक्ष लिए न्याय करे। वह सिर्फ न्याय के बारे में ही सोचे और पूरा दूध का दूध पानी का पानी कर दे।न्याय करने वाले को हमेशा क्रोध, लालच, मोह और अहंकार से ऊपर उठ कर न्याय करना चाहिए।

कंचन वासन

(ii) प्रश्न - अलगू, जुम्मन और ख़ाला में से आपको कौन सा पात्र अच्छा लगा और क्यों ?

उत्तर - अलगू, जुम्मन और खाला में से हमें जुम्मन सबसे अच्छा लगा। क्योंकि जब अलगू ने न्याय किया तो उसके हृदय में कोई गुस्सा या बदले की भावना नहीं थी, परंतु जब जुम्मन पंच के पद पर बैठा तो उसके मन में अलगू के प्रति गुस्सा था और बदले की भावना भी थी फिर भी उसने सही न्याय किया और फैसला अलगू चौधरी के हक में सुनाया ।

(iii) दोस्ती होने पर भी अलगू ने जुम्मन के खिलाफ फैसला क्यों दिया और दुश्मनी होने पर भी जुम्मन' अलगू के पक्ष में फैसला क्यों दिया?

उत्तर-अलगु चौधरी और जुम्मन शेख परम मित्र थे किंतु जब पंचायत में न्याय करने के लिए अलगू को सरपंच चुना गया तो उसने मित्रता को भूलकर सरपंच के कर्तव्य का निर्वाह किया और फैसला बूढ़ी खाला के पक्ष में सुना दिया। अलगू के इस फैसले से दोनों की मित्रता में दरार आ गई ।जुम्मन बदला लेने का अवसर ताकने लगा।

परंतु जैसे ही अलगू और समझू साहू के झगड़े का निपटारा करने के लिए जुम्मन सरपंच बना तो उसे सरपंच की पदवी की गरिमा का ध्यान आया। सोचने लगा कि सरपंच के मुख से निकलने वाला वाक्य देव वाणी के समान होता है। अत: उसे निजी रोष और क्रोध से ऊपर उठकर न्याय करना चाहिए।

(iv) अलगू के पंच बनने पर जुम्मन के प्रसन्न होने और जुम्मन के पंच बनने पर अलगू के निराश होने का क्या कारण था?

उत्तर-बूढ़ी खाला तथा जुम्मन शेख के झगड़े का निपटारा करने के लिए जब खाला ने अलगू चौधरी को सरपंच चुना तो जुम्मन खुशी से उछल पड़ा। उसने सोचा कि अलगू चौधरी कभी उसके विरोध में फैसला नहीं देगा। परंतु अलगू ने सच का साथ देकर बूढ़ी खाला के पक्ष में फैसला सुना दिया। इसलिए जब समझू साहू और अलगू के झगड़े में जुम्मन को सरपंच चुना गया तो अलगू चौधरी निराश हो गए, उन्हें भय था कि आज जुम्मन अवश्य ही उनसे बदला लेगा और फैसला समझू साह के पक्ष में सुनाएगा।

(ख) भाषा बोध

1. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए:
मुख, पंच, मित्र, ग्राम, उच्च, गृह, मृत्यु संध्या,मास,निष्ठुर

उत्तर

तत्सम	तद्भव
मुख	मुंह
पंच	पाँच
मित्र	मीत
ग्राम	गाँव
उच्च	ऊँचा
गृह	घर
मृत्यु	मौत
संध्या	शाम
मास	महीना
निष्ठुर	कठोर

(ख) भाषा बोध

2. विराम चिह्न

प्रेमचंद ने ठीक ही कहा है, "खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का।"

उपर्युक्त वाक्य में हिंदी विराम चिह्नों में से 'उद्धरण चिह्न' का प्रयोग हुआ है। किसी के द्वारा कहे गए कथन या किसी पुस्तक की पंक्ति या अनुच्छेद को ज्यों का त्यों उद्धृत करते समय दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। पूर्ण विराम तथा अल्प विराम पिछली कक्षाओं में करवाए गए हैं। निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त स्थान पर उचित विराम चिह्न लगाएँ

1. जुम्मन ने क्रोध से कहा अब इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ
2. खाला ने कहा बेटा क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे
3. अलगू बोले ख़ाला तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है
4. उन्होंने पान इलायची हुक्के तंबाकू आदि का प्रबंध भी किया था।

(ख) भाषा बोध

2. विराम चिह्न

उत्तर

1. जुम्मन ने क्रोध से कहा, "अब इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ।"

2. खाला ने कहा, "बेटा क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?"

3. अलगू बोले, "खाला, तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाड़ी दोस्ती है।"

4. उन्होंने पान, इलायची, हुक्के-तंबाकू आदि का प्रबंध भी किया था।

3. निम्न लिखित मुहावरों का अर्थ समझ कर इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

1. मौत से लड़ कर आना - मृत्यु न होना
रेशमा अपनी सास को कोसते हुए कहती थी कि वह मौत से लड़कर आई है।

2. कमर झुक कर कमान होना - बूढ़ा हो जाना
शहर शहर घूमते हुए मेरे दादा जी की कमर झुककर कमान हो गई थी।

3. दु:ख के आंसू बहाना - दु:ख के कारण रोना
हमें हर किसी के सामने दुःख के आँसू नहीं बहाने चाहिए।

कंचन वासन

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

4.मुंह न खोलना - चुप रहना
अलगू ने खाला से कहा कि वह पंचायत में आएगा तो अवश्य लेकिन मुँह न खोलेगा।

5. रात दिन का रोना - दुखी रहना
बहू का अत्याचार बूढ़ी सास के लिए रात दिन का रोना हो गया है।

6. राह निकालना - युक्ति निकालना
अलगू ने रोज़ - रोज़ के झगड़े को समाप्त करने के लिए पंचायत करने राह निकाली ।

7. हुक्म सिर माथे पर चढ़ाना - बात मानना
आज भी गांवों में लोग पंचायत के हुक्म को सिर माथे पर चढ़ा लेते हैं।

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

कंचन वासन

8. मुंह खुलवाना - बात उगलवाना
पुलिस तरह-तरह के प्रश्न करके अपराधियों का मुंह खुलवा लेती है।

9. कन्नी काटना - बचना
राजेश हमेशा काम करने से कन्नी काटता है।

10. ईमान बेचना - बेईमान होना
ख़ाला ने अलगू से कहा कि दोस्ती के लिए ईमान बेचना सही नहीं होता।

11. मन में कोसना - मन में बुरा भला कहना
बूढ़ी खाला दिन रात जुम्मन की पत्नी को मन ही मन कोसती रहती।

12. जड़ खोदना - बात को बार - बार कुरेदना
जुम्मन को दुख था कि उसका मित्र ही उसकी जड़ खोद रहा था।

13. सन्नाटे में आना - स्तब्ध या सुन्न हो जाना
पंचायत का फैसला सुनने के बाद जुम्मन सन्नाटे में आ गया।

14. दूध का दूध पानी का पानी - पूरा - पूरा न्याय करना
पंचायत ने अपने फैसले से दूध का दूध पानी का पानी कर दिया।

15.जड़ हिलाना - नष्ट करना
अब हम सब ने भ्रष्टाचार की जड़ हिलाने की ठान ली है।

कंचन वासन

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

16. तलवार से ढाल मिलना - शत्रुता के भाव से मिलना
पंचायत के बाद जब अलगू और जुम्मन मिलते तो वे ऐसे मिलते थे जैसे तलवार से ढाल मिल रही हो।

17. आठों पहर खटकना - हमेशा बुरा लगना
नेहा को अब उसकी सास आठों पहर खटकने लगी थी।

18. मन लहराना - खुशी होना
अपने घोड़े को देखकर बाबा भारती का मन लहरा उठता।

19. लाले पड़ना - मुश्किल में पड़ना
समझू साहू को एक-एक खेप के लाले पड़ रहे थे।

कंचन वासन

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

20. मोल तोल करना - कीमत तय करना
काफ़ी बहस करने के बाद बैल का
मोल-तोल कर लिया गया।

21.लहू सूखना - अत्यधिक डर लगना
डाकू खड़ग सिंह को देखते ही गांव वालों
का लहू सूख जाता।

22. नींद को बहलाना - जाग - जाग कर
रात काटना
प्रिय घोड़े के चोरी हो जाने के बाद सेठ जी
अपनी नींद को बहला रहे थे।

23. हाथ धो बैठना - गंवा बैठना
अपनी मूर्खता के कारण तुम अच्छे मित्र से
हाथ धो बैठे।

कंचन वासन

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

24. कलेजा धक् - धक् करना - व्याकुल होना
पंचायत में जाने से पहले अलगू का कलेजा धक् - धक् कर रहा था।

25. फूले न समाना - बहुत प्रसन्न होना
पुत्र के विदेश से आने की खबर सुन कर मां फूली न समा रही थी।

26. गले लगाना - आलिंगन करना
गलत फहमी दूर होते ही दोनों मित्रों ने एक दूसरे को गले लगा लिया।

27. मैल धुलना - दुश्मनी खत्म होना
अंत में दोनों मित्रों के दिल से सारा मैल धुल गया।

कंचन वासन

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. यदि अलगू जुम्मन के पक्ष में फैसला सुना देता तो ख़ाला पर क्या गुज़रती ?
2. यदि जुम्मन शेख-समझू साहू के पक्ष में फैसला सुना देता तो अलगू क्या सोचता ?
3. 'दूध का दूध पानी का पानी' पर कोई घटना या कहानी लिखें।

प्रिय छात्रो,
पूरी कहानी पढ़ने और समझने के उपरांत कुछ रचनात्मक प्रश्नों के उत्तर आप के रचनात्मक विकास हेतु हैं। आप कहानी को समझने के उपरांत इन प्रश्नों का उत्तर सोचिए और उसे लिखने का प्रयास करिए।
आपके अध्यापक सदैव उपस्थित हैं... हर क्षण .. हर स्थिति में ... आपके लिए...

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

कंचन वासन
हिंदी अध्यापिका
सरकारी कन्या हाई स्कूल
शाहकोट (जालंधर)

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. अपने गाँव में लगने वाली ग्राम पंचायत के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. सरपंच बनकर फैसला करते समय आप अपने मित्र को महत्व देते या फिर न्याय व्यवस्था को इस पर अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
3. यदि आप ख़ाला की जगह होते तो क्या आप भी न्याय के लिए इतनी ही हिम्मत और साहस दिखाते या अन्याय सहते-इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. पुस्तकालय से प्रेमचंद के कहानी-संग्रह 'मानसरोवर' में से मित्र, 'नशा', 'नमक का दारोगा' आदि कहानियाँ पढ़िए।

प्रिय छात्रो

जब तक हम सब कक्षा में यह चर्चा न कर सकें,आप अपने परिवार के सदस्यों से इन विषयों पर चर्चा करिए। मुंशी प्रेमचन्द जी की जो भी रचना उपलब्ध हो सके उसका अध्ययन करिए।

कंचन वासन
सरकारी कन्या हाई स्कूल
शाहकोट (जालंधर)

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **हज :** हज एक इस्लामी तीर्थ–यात्रा और मुस्लिमों के लिए सर्वोच्च इबादत है। हज–यात्रियों के लिए काबा पहुँचना जन्नत के समान है। काबा शरीफ मक्का में है। हज मुस्लिम लोगों का पवित्र शहर मक्का में प्रतिवर्ष होने वाला विश्व का सबसे बड़ा जमावड़ा है।

2. **उर्दू में रिश्तों के नाम**

अम्मी (माता)	–	अब्बू (पिता)
वालिदा (माता)	–	वालिद (पिता)
वालिदेन	–	माता पिता दोनों के लिए
बीवी (पत्नी)	–	शौहर (पति)
ख़ाला (मौसी)	–	ख़ालू (मौसा)
ख़ालाज़ाद	–	मौसी के बच्चे
मुमानी (मामी)	–	मामूं (मामा)
सास	–	ससुर
भाबी	–	भाई
बहन	–	बहनोई
बेटी	–	दामाद

धन्यवाद ******

सदैव प्रयासरत

कंचन वासन

सरकारी कन्या हाई स्कूल
शाहकोट (जालंधर)

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग

भाषा शिक्षण एक कला

भय था
भविष्य कहीं न छुप जाए
प्रगति कहीं न रुक जाए
तो सोचा
हर घर गुरुकुल बन जाए

प्रयासरत :

कंचन वासन
हिंदी शिक्षिका
सरकारी कन्या हाई स्कूल
शाहकोट (जालंधर)

मार्गदर्शक और सहयोगी
हरीश नागपाल
(जिला रिसोर्स पर्सन हिन्दी,जालंधर)
हिन्दी शिक्षक सरकारी हाई स्कूल निज्जरां.

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग